मीनाक्षी

। नारी प्रधान काव्य संग्रह।

नन्दलाल भारती

अन्तरजाल संस्करण–2009

तकनीकी सहयोगी

आजादकुमार भारती

अनुराग कुमार भारती

चित्रकार

शशि भारती

सर्वाधिकार–लेखकाधीन

सम्पर्क

– आजाद दीप, 15–एम–वीणा नगर ,इंदौर ।म.प्र.।

दूरभाष–0731–4057553 चलितवार्ता 09753081066

Email- nlbharatiauthor@gmail.com

http://www.nandlalbharati.mywebdunia.com http://www.nandlalbharati.bolg.co.in

वन्दना

मां देकर योग्यता का वरदान उबार देना
ज्ञान की देवी मां जीवन में सरस बरसाना
फंसे नाव अधर में जब तू ही हाथ लगाना

मां तेरा हाथ मेरे माथ साध पूरी कर देना
मां देकर योग्यता का वरदान उबार देना..........
साध यही, योग्यता का वरदान तुमसे पाउं
निछावर वैभव सारा तेरा होकर रह जाउं
जीवन थाती तेरे चरणो में मां सफल बना देना
मां देकर योग्यता का वरदान उबार देना.....
जीवन में स्वर दो सितार तुम्हारे हाथों में
विराजो हृदय में सदा राह दिखाओ
मैं अज्ञानी,भावना के फूल श्रध्दा की थार लाया
जब तक सांस मां वन्दना की आस वर देना
मां देकर योग्यता का वरदान उबार देना............

1—सलाम

मां तुम्हारी देह 27 अक्टूबर 2001 को
पंचतत्व में खो गयी थी
मां मुझे याद हो तुम
तुम्हारी याद दिल में बसी है ।
आज भी तुम्हारा एहसास
साथ साथ चलता है मेरे
बिल्कुल बरगद के छांव की तरह ।
दुख की बिजुड़ी जब कड़कती है
ओढा देती हो आंचल मेरी मां
अन्दाजा लग जाता है मुझे ,
तुम्हारे न होकर भी होने का ।
सुख—दुख में तुम्ही तो याद आती हो
तुम्हारी कमी कभी कभी बहुत रूलाती है ,
जब ओसारी में गौरैया,
जूठे बर्तन के फेंके पानी से
जूठन चून कर अपने,
बच्चो के मुंह में बारी—बारी से डालती है ।
तब तुम और तुम्हारा संघर्ष बहुत याद आता है
उभर आता है,
धुधली यादों में बसा मेरा बचपन भी
मां तुम भी उतर आती हो
परछाई स्वरूप मेरे सामने
और
रख देती हो सिर पर हाथ ।

कठिन फैसले की जब घड़ी आती है
तब तुम्हारी तस्वीर उभर आती है
जीवित हो जाती हो जैसे तुम
हृदय की गहराईयों में
राह बदल लेती है हर मुश्किले ।
मां तुम्हारे आशीश की छांव
फलफूल रहे है तुम्हारे अपने
सींच रहे हैं तुम्हारे सपने
और
रंग बदलर्ती दुनिया मे, टिका हूं मैं भी ।
मां तेरे प्रति श्रध्दा ही जीवन का उत्थान है
यही श्रध्दा देती रहेगी हमें
तुम्हारी थपकियों का एहसास भी ।
मां तुम तो नही हो, देह रूप में
विश्वास है,
तुम मेरी धड़कन में बसी हो
हर माताओ के लिये ,
गर्व का दिन है मातृदिवस
आराधना का दिन है आज का,
मेरी दुनिया है मेरी मां स्वर्गीय समारी,
करते है वन्दना तुम्हारी
जीवनदायिनी पल पल याद आती है तुम्हारी
मरकर भी अमर है तेरा नाम
हे मां तुम्हे सलाम...... नन्दलाल भारती

2–हमारी बेटियां

उगता हुआ सूरज शशि चांद है ,
हमारी बेटियां .....
जमाने की बहार,सौभाग्य है
हमारी बेटियां ....
नभ के तारे,धरा की शान है ,
हमारी बेटियां....
बसन्त है बहार है,रिश्ते की आन–मान है,
हमारी बेटियां ....
सभ्यता,समाज की उजली पहचान है,
हमारी बेटियां........
अफसोस कहीं भ्रूण हत्या,तो कही जलायी जा रही,

हमारी बेटियां........
भारती करें कठोर प्रतिज्ञा,
बचाये आन–मान पहचान,
जो हैं हमारी बेटियां............ नन्दलाल भारती

3–लड़की

जब वो पैदा हुई थी
सगे सम्बधियों की छाती का बोझ बढ गया था ।
सोहर तो हुआ था, पर स्वर दबा सा था ।
वो गति से बढने लगी थी
नाक नक्श सुमन सा था ।
सिना–पिरोना सीख गयी थी ।
चिन्ता की लकीरें,
बाप के माथे पर उभर रही थी ।
अभिलाषाओं के दमन की तैयारी थी ।
वो जन्मजात परायी थी ।
यौवन की दहलीज चढी भी नही की,
सात फेरो में उलझ गयी थी ।
चुटकी भर सिन्धुर के भार दब गयी थी ।
भारती वो एक लड़की थी । नन्दलाल भारती

4–दुनिया देख लेने दो ।

ये कैसा अनर्थ,
हत्या,अजन्में के कत्ल की साजिश।
दीवार के पार से आहट आयी ।
पेट में मारने की साजिश
मां घबराई ।
कोमल आवाज गुहार होने लगी थी
दुनिया देख लेने दो हमें भी ।
कड़क सी आवाज,
कहां से ढेर सारा रूपया आयेगा ।
अगर यही दब गयी ना,
बुझ जायेगी आग फिर ना जलेगी
ना देना होगा दहेज
ना जलेगी नवयौवन कोई आग ।
आओ चलो बुझा दे,
जीवन देने वाला मारने के लिये
हथियार सजा कर रखा होगा ।

मुसीबत आने से पहले दफन कर दे ।
रूआंसी सहमी सी आवाज,
सन्नाटे को चिर आयी,
नही जाना मुझे कहीं ।
मुकाबला करेगे,
मिलकर हल ढूढ लेगे
सामाजिक बुराईयों और दहेज का ।
जन्म से पहले जिसे मार देना चाहते हो
एक बार दुनिया देख लेने दो । नन्दलाल भारती

5–खिल जाने दो कली ।

जीव कोई तड़प तड़प कर मर रहा है।
पता चल गया है ।
कन्याभ्रूण,खुद के खून का खून कर रहा है ।
वंश के मोह घिनौना अपराध,
हत्या कर रहा है ।
पशु भी नही करता ऐसा,
टाज का आदमी कर रहा जैसा ।
मेह भ्रमजाल,बेटी–बेटा का भेद,
बेटी–बेटा एक समान
एक को आंख ठेहुन देजे को जान ।
बेटा–बेटी प्रकृति की देन,
मानव जीवन की पहचान ।
क्यों भ्रूण का परीक्षण,
ले लेने दो सांस,वो भी तेरी सन्तान,
कसम भारती तुमको, जीवन देने वाले की....
खिल जाने दो कली ।
सपनों में गुथ देगी लड़ियां,
चांद सितारों की........ नन्दलाल भारती

6–बेटी बढ रही है ।

भईया चिन्तित लग रहे हो,
बेटी बड़ी होने लगी है ।
खुद के पांव खड़ी होने लगी है ।
चल–चलकर दौड़ने लगेगी ।
देश का विधान देख लेगी ।
अधिकार की मां करेगी ।
बेटी उंची उड़ान की सोच रही है ।

समाज में दहेज की कलंक है,
बीटिया का अच्छा रंग है ।
उंचे ख्वाब देख रही है ।
देख रही है तो देखने दो ।
परम्पराओं का क्या होगा ?
पालन करना होगा ।
चूल्ह–चौका,सिलाई–पुराई सीखाओं,
सती–सावित्री की कहानी सुनाओ ।
बिल्कुल नही,
पढाउंगा,लिखाउंगा ।
बीटिया नाम रोशन करेगी ।
पढेगी–लिखेगी आगे बढेगी ।
बूढी प्रथाओं को दफन करना होगा अब
बेटी–बेटा बरोबर है अब
खुद के पांव चलने दो
बेटी बढ रही है तो बढने दो......नन्दलाल भारती

7–निदान

दीवार पर टंगी मां की तस्वीर है
हर सुबह जहां नतमस्तक होते है,
हमारे जैसे इंसान ।
साथ में खड़ी औरत कोई और नही
अर्धांगिनी है ।
दुख–सुख में ईमानदारी के साथ,
हाजिर रहती है ।
उपवास व्रत रखती है ।
पीछे खड़ी बहन है,
हर साल बांधती है जो राखी ।
भाई को जिसका इंतजार रहता है
वचन दोहराता है वह भी रक्षा का ।
सुबह–शाम भगवान के सामने,
हाजिर होती है ,बाप के लिये ।
मां–बहन,पत्नी और बेटी
सभी तो औरत जात है
औरत क्यों सुलग रही है,विचार तो करे ।
ना गूंजे भेद की फुफकार, मिले बराबरी का अधिकार
ना उठे सिसकिंया ना उठे उत्पीड़न के धुयें

आओ बुराईयों का निदान तो करें । नन्दलाल भारती
24.07.09

8–बालविवाह

अबोध बालाओं का ब्याह
खुशियों का चीरहरण,भविष्य की स्याह ।
ये सभ्य समाज की आन नही,
परम्पराओं की आड़,
मां–बाप दे रहे बलिदान यही ।
बूढी परम्परा का मोह जाति और वंश
अबोध बेबस झेलने को बालविवाह का दंश ।
कौन बाल विवाह का विरोध करे,
हाथ उठेगे बहुतेरे ।
है कोई जो खिलाफत कर सके ,
जातिवंश गोत्र से उपर उठ सके ।
सच मान लो,
जातिवंश का चक्रव्यूह जब टूट गया
नवप्रभत संग बालविवाह रूक गया । नन्दलाल भारती

9–दहेज

भाई बड़े खुश लग रहे हो ,
खजाने का ख्वाब दे रहे हो ।
हां भाई बेटा बड़ा हो गया है ,
ब्याह करने की सोच रहा हूं ।
दुल्हन घर में आयेगी ,
साथ ढेर सारा दहेज लायेगी ।
कमी सब दूर हो जायेगी,
दहेज संग अमीरी आयेगी ।
बेटा को पढाया लिखाया,
सुख –सुविधा ना कर पाया ।
कमाई बेटे की पढाई पर गंवायी,
दहेज की फसल तैयार हो आयी ।
अब अपना भी दिन फिी जायेगा,
दुल्हन संग दहेज जो आयेगा ।
देख भाई दहेज की अच्छी नही है सोच,
संस्कारवान,गुणवान,पढी–लिखी बहू की सोच । नन्दलाल भारती

10–औरत

औरत नाम त्याग का,क्या –क्या कर जाती हो ,

तपस्या दिन रात एक कर जाती हो ।
पति के दुख में दुखी,खुशी में नांच जाती हो ,
तुम ही तो हो जो जरूरतो को समझती हो ।
जीवन के अनमोल पल लुटाती हो
खुद के दर्द से बेखबर ,
घर–परिवार के दर्द में कराह जाती हो ।
बदले क्या देता ये जग तुमको,
रिसते आंसू,
फिर भी जीवन लुटाती हो ।
भ्रमबस जग नही समझ सका तुमको
उपयोग किया खूब आंचल और तुम्हारे आंसू को ।
तुम मां के रूप में सृजनकारी हो,
बहन के रूप में कच्चा धागा बांधकर
सुरक्षा की गारण्टी चाहती हो ।
सात फेरे में सात जन्म तक साथ निभाती हो
गले में मंगलसूत्र मांग में सिन्धूर सजाती हो ।
आज भी तुम सीता सी लगती हो,
पुरूष खुद को राम समझता है ।
औरत एक पर ज्ञान,धन बल का रूप रखती हो,
पूज्य नारी ना अभिमानी,
प्रणाम तुम्हे, तुम त्याग का जीवन जीती हो । नन्दलाल भारती

11–नारी

नारी तुम बुनती हो नित नये सपने
करती हो साकार हितार्थ बस ना अपने ।
चाहती हो बटोरना,पर बिन बटोरे रह जाती,
ना किसी से कम ना कोइ्र बात ऐसी
मजबूरियां खूटें से बंधी रहती
चाहती तोड़ना पर ना तोड़ पाती ।
जीवनदायिनी पाठशाला है वो
कमजोर तो नही ?
विरासत में मिली ।
दिन रात पीसती है जो
चलना जिम्मेदारी निभाती है वो ।
शोषण,उत्पीडन,दहेज से घबराने लगी है
पंख फड़फड़ाने लगी है ।
भूत भविष्य वर्तमान है जो,

सिसकती, छिनना चाहती है,
बार–बार बलिदान कर जाती है वो ।
चाहती रचना नित नया,
सदा से रचती आयी है वो ,
लक्ष्मी,दुर्गा सरस्वती है जो
कही पानी तो कही आग है वो ।
नित नये सपनों के तार बनुती है वो,
नवसृजन करती वन्दनीय नारी है जो । नन्दलाल भारती

12–जीवन विकासिनी

हे नारी तुम हो सृजनकारी,
जगत कल्याणी श्रद्धा हमारी ।
ब्रहमस्वरूपी करती सर्वस्व अर्पण
बंधी विरासत करती समर्पण ।
खींचती खाका पक्का सृजन का सारा,
सृष्टि की वरदान झरती त्याग की धारा ।
खुद को न्यौछावर करना कोई तुमसे सीखे,
दिव्यज्योति दुर्गा,लक्ष्मी सरस्वती सरीखे ।
हे कल्याणी तुम बिन जीवन कैसा,
ऋणी जग पर तू कहता उपकार कैसा ।
जीवनदायिनी चलते रहना काम है तेरा,
ममता की मूर्ति मंगलकारी है नारी,
जहां पड़े पग तेरे साबित हुई उपकारी ।
नेकी माने जग सारा वक्त कहे महान
जब तक चांद में शीतलता,
सूरज में है ताप
नभ जैसा उंचा नाम तेरा,
तू ही है धरती का स्वाभिमान। नन्दलाल भारती

13–कल्याणी

दैवीयस्वरूपी घायल कल्याण में आज,
शोषण के भार दबी भर रही आह ।
पीड़ा के समन्दर डूब रही,
त्याग की मूरत विरोध करना सीखा नही ।
हार जाती मोह में पी जाती विष,
पूत भले बने कपूत,मन से देती आशीश ।
तेवर तनिक बदल खुद को पहचानो,

मर्यादा से लिपटी भृकुटि तो तानो ।
शोषण के खिलाफ उतर जाओ,
कर बुराईयों का दमन समाज स्वस्थ बनाओ ।
सबल हो तुम ना छू पायेगी कोई आंच
फेंक दो नकाब, पथ में ना होगी सांझ ।
दैवीयस्वरूपी तू तो है जीवन का आस,
प्रभु ने दिया तुम्हें,
ममता समता का वरदान खास ।
बनी रहो कल्याणी ना सहो अभिशाप,
बढे बुराई तुम्हारी तरफ खींच लो तलवार
किया है जग और करेगा जयकार..... नन्दलाल भारती

14–नारायणी

गंगा सी मनोरथ वाली नारयणी,
मानवता का गौरव जगत कल्याणी ।
दया अपार ममता का सागर अथाह,
घर परिवार पर आते ,
दुख का झोका कर जाती कराह।
मर्यादा खातिर हर हलाहल पी जाती,
पति को परमेश्वर,
खुद अर्धांगिनी बन कही जाती ।
स्वार्थ की आंधी जीवन में भर रही है खार,
आंखों में झरता नीर ,कल्याणी होती लाचार ।
अंधविश्वासी लोग सीता भी छली गयी,
अग्नि परीक्षा देकर भी मुक्त नही हुंई ।
आज भी कल्याणी कर रही गुहार,
समानता का मांग रही अधिकार,
चाहती बुराईयों का बहिष्कार ।
हे दुनिया वालो ,
गंगा सी मनतव्य वाली का सुनो पुकार,
क्यों पीये विष कल्याणी,दे दो अधिकार । नन्दलाल भारती

15–धरती का साज

नारी जीवन विरह का पर्याय नही
परमार्थ की सौगात उत्पीड़न का जीव नही ।
नयनों में आंसू अथाह,
उर से बरसे वचन महान,
पग पड़े जहां,

वहां सम्वृध्दि के बने निशान ।
नारी जीवन न्यौछावर और सौगात,
खुद से बेखबर,
परिवार की फिक्र में बोती आस ।
होठों पर मुस्कान,
पलकों पर आंसू के हार,
व्यथा की बोझ भारी,
नारी जाती जीत–जीत कर हार ।
पुलकित जग ममता की निर्मल छांव,
धरती की सांज नारी,
कुसुमित परिवार जहां पड़े तेरे पांव । नन्दलाल भारती

16–सम्मान

वेद पुराणों ने माना,
हमने भी दिया है सम्मान,
पाती नारी जहां है मान,
वहां पालथी मारे सम्पन्नता,
कथन महान ।
वज्र सी कठसरे अग्नि सी प्रचण्ड
पुष्प सी अभिलाषा,
मिट जाती फर्ज पर खण्ड–खण्ड ।
उज्जवल मनोरथ परिवार की कश्ती,
लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा की प्रतिमूर्ति ।
आदर्श आज भी जहां में,
निश्छल मान मानव–मन में ।
मान को बहार स्वाभिमान की चाहिये
घर बना रहे मंदिर ,
त्याग के बदले नारी को सम्मान चाहिये ।नन्दलाल भारती

17–कुन्द्रन

आह ये कैसा कुन्दन,
आयी थी सपने लेकर
बहू आंसू में नहा रही ।
जन्म से परायी थी,
अपनेपन की आस में आयी थी ।
सात फेरों ने उलझाया,
अपना भी हो रहा पराया ।
ना जुल्म करो ना आंखे बन्द करो,

दुल्हन ही दहेज नारा बुलन्द करो ।
बड़े अरमान थे,
गृहलक्ष्मी है उसे अपनाओ,
दिल के टुकडे को ना सुलगाओ ।
किसी की औलाद तुम हो,
तुम्हारी भी है औलादें,
क्यों दर्द दे रहे ,
आयी थी लेकर लालसा,
सौदामिनी को सौंप रहे ।
ना कराओ क्रुन्दन ,
गृहलक्ष्मी की आरती उतारोगे,
खुद की बेटी रानी की आंखों में
आंसू नही पाओगे ।
करो प्रतिज्ञा दहेज दानव का करोगे बहिष्कार,
दुल्हन ही देहज करोगे स्वीकार । नन्दलाल भारती

18– तस्वीर

आह क्या तस्वीर लदी है फूलमाला से
दहेज लोभियों की दुकान पर,
अरमान के समन्दर को आंसू दिये,
दहेज के नाम पर बाप की कमर,
भाई के कंधे तोड़ दिये ।
चेहरे पर शरम के भाव तनिक,
दिल में किसी और बाप को ठगने,
और बेटी जलाने की हवश है
अरे पापियों सिक्के के लिये,
गृहलक्ष्मी की जलाया,
तुमने अगले कई जन्मों के लिये,
महापाप है कमाया ।
कसमें वादे करने वाला निर्मोही हो गया,
खानदान का खजाना भरने करने के लिये
दहेज लोभी हो गया ।
गवाह नही होने का जश्न मना रहे हो,
बहू की मौत का झूठा मातम मना रहे हो,
गवाह हो खुद बहू की हत्या का,
तुम्हारी आंखों ने देखा है,
देह शान्त हो गयी है,

तुम्हारे अन्दर ज्वार–भांटा उठ रहा है
ज्वार–भाटे तुम्हार को जब छेदेगा,
कान के परदे फटने लगेगे
बहू के रोने–बचाओ–बचाओ की आवाज से ।
टूट जायेगी तुम्हारी खामोशी
तब तुम करोगे गुहार,
गिड़गिडाआगे खुद के गुनाह से दबे,
फूलमाला से लदी तस्वीर के सामने,
तकि तुम्हारे साथ ना हो सके ऐसा ।
अरे अमानुषो दहेज लोभ महामारी है,
एक बार लग गयी तो,
कई पीढियों की तबाही है ।
कर लो तौबा दहेज से, किसी लड़की को तस्वीर न बनाओ ।
नही हुआ ऐसा तो वक्त नही माफ कर पायेगा
पीढियां मुंह छिपायेगी,ना होगा दूजा कोई रास्ता,
क्यों देते हो दंश ऐसा,
रखो नवविवाहिता का मान,
वैभव बरसेगा, घर होगा मंदिर ,
तुम बन जाओगे देव समान । नन्दलाल भारती

19–मीनाक्षी

मीनाक्षी के सपने नही मरते
पानी के बुलबुलों की तरह
क्योंकि ये सपने अपने लिये नही
क्ल्याण के लिये बनते है,
और बिगड़ते भी ।
मीनाक्षी के सपने त्याग के धरातल पर
पनपते है और संवरते भी
मानव उत्थान के लिये
तभी तो जीवित रहते
सच मीनाक्षी के सपने नही मरते ।
मीनाक्षी के सपनो पर,
चढा होता है,
मर्यादा,परम्परा सामाजिक ताने बाने का
सुदृढ बर्क
तभी तो समय के आर–पार चलते है
खुली आंखों में बसते है सपने ।

मीनाक्षी रहती है सावधान,
रात की स्याह से
भेड़ियों के प्रहार से भी
मजबूत समर्पण भाव के आगे
नही टिक पाते व्यवधान
तभी तो मीनाक्षी पूज्यनीय है
और जीवित रहे है उसके सपने ।
मीनाक्षी के सपने करवटों से नही चटकते
रेत की महल सरीखे नही गिरते,
बर्फ की शिला की तरह नही पिघलते
क्यों मीनाक्षी के सपने होते है
कायनात के भले के लिये
सच ऐसे सपने कहां मर सकते हैं ?नन्दलाल भारती
।मीनाक्षी अर्थात मछली की तरह खुली आंखे रखने वाली मां ।

20–मुट्ठी में आसमान

आज गांव को देखकर ऐसा लगने लगा है,
मानो हमारा गांव तरक्की करने लगा है ,
कण्डे थापने वाले हाथ
कलम थामने लगे है ।
गांव की दहलीज पर सर्वशिक्षा अभियान,
बेटा–बेटी मां –बाप के आंख–ठेहुना समान,
दहेज,भ्रूण हत्या पाप है
लड़की का जन्म पुण्य, नही कोई अभिशाप है ।
आज के ये ब्रह्मवाक्य गहराई तक उतरने लगे है,
बुढी रूढियों के दम उखड़ने लगे है ।
तभी तो गांव की लड़कियां साइकिल पर सवार,
लड़कियों के झुण्ड
तितिलियों जैसा रंग बिखेरता हुआ
मन को हमारे सकून देने लगा है ।
पीछे झांक कर मन बोझिल हो जाता है,
क्यों हुआ अन्याय बूढी रूढियों के भ्रम
लड़की की तकदीर का हुआ दहन,
आज भी लड़कियां सिलाई–पुराई से उबी नही है,
बदलते वक्त में आसमान,
छूने की ललक में डूबी हुई है ।
एहसास पुख्ता होने लगा है

लड़की का भाग्य संवरने लगा है
मुट्ठी में आसमान आने लगा है
सच मुझे यकीन होने लगा है
हमारा गांव भी अब तरक्की करने लगा है ।नन्दलाल भारती

21–मर्यादा

औरत है जीवन की मर्यादा
पछु की ओर ताक कर जाती उलंघन भारी,
फंस जाती मुसीबत के भ्रम,
तोड़ जाती मर्यादा खुद की स्वाभिमान की
लगने लगते है लांछन
मर्यादा की रेखा लांघते ही।
ममता की छांव से झांकता,
गुनाह करता चेहरा, आग उगलता चेहरा
ऐसी उम्मीद भी न तो थी
कि औरत भी औरत को लूट लेगी
चाकू की नोक पर,
पर ऐसा भी होने लगा है
मर्यादा की लक्ष्मण रेखा खुद तोड़ने लगी है
चकाचौध की चाह में बदनाम होने लगी है ।
कैकेयी मंथरा के रूप में वक्त को ठगी है,
वही औरत सीता सावित्री के रूप में ही नही
हवा से बात करते हुए मर्यादा मे रहते हुए
समाज को दिशा देती,
इतिहास रचने लगी है
सामाजिक बुराईयों के दहन के लिये बढने लगी है।
सच मानो बेपरदा होते ठगी –ठगी लगती है
कत्ल मर्यादा का खुद नुमाईश बनती है
हे जीवन की मर्यादा बनी रहो आस्था,
समय के साथ बढो,आसमान छुओ
मत तोड़ों वसूलों को
क्योंकि
मर्यादा के आवरण में तुम
आदरणीय लगती हो ।नन्दलाल भारती

22–फिक्र

ज्यों–ज्यों बेटी बड़ी होने लगी है,
फिक्र बढने लगी है ।

मै जानता हूं,
मेरी फिक्र से बेटी फिक्रमंद है
वही तो है,
जिसे बाप के दर्द का एहसास है
सच बेटी ही तो है असली दुनिया ।
तमन्ना है मेरी भी,
वह आसमान छू ले
यकीन है,
वह हर उचाईयां छू लेगी
क्योंकि उसमें उडने की ललक है,
तभी तो अव्वल है।
बेटी ही तो है
जो बाप के लिये पूजा करती है,
सुबह –शाम भगवान की ।
कभी गुरू बन जाती है तो कभी शिष्या
कभी डांटती है तो कभी समझाती है
कभी सिर पर हाथ फिराती है सुरक्षा का ।
सच बेटी को फिक्र है,
बाप और खानदान के मर्यादा की ,
मां–बाप और भाई को फिक्र है
उसके कल की ....नन्दलाल भारती

23–ख्वाब

हे देवी तुम हो तो जीवन है
समर्पण तुम्हे आदरणीया बनाता है
खटकने लगी है एक बात
तुम्हे भी खटकती होगी
बेपरदा....
परदा तो मर्यादा पोषित करता है,
मैं नही चाहता कि तुम
काले आवरण में ढंकी रहो
रूढिवाद के बोझ दबी रहो
मेरा तो ख्वाब है,
उची–उची उडाने भरो
पीछे मुड़कर देखो तो लौटने का मन न करे ।
सम्भालो खुद को
बेहया बयार में हया से परदा ना उठने दो ।

यही परदा तुम्हारी अस्मिता और
देवी रूप का रहस्य भी ।
देवी ज्ञान,धन बल की पर्याय
विनती है तुमसे
मर्यादा के लिबास में उडानें भरती रहो
बस इतना सा मेरा ख्वाब है । नन्दलाल भारती

24–सहगामिनी

निहार–निहार नही थंकता
हया में नहाया चांद से चेहरा उनका
नही भूल पाता खुशबू वो
आने से उनके सांसो में बस गयी है जो ।
पलके बिछाये आज भी मिल जाती है
मौन बहुत कुछ कह जाती है ।
दिन बरस बित गये बहुतेरे
याद है कसमें वादे और वे सात फेरे ।
आज भी वो अपने वादे पर खड़ी है
हाथ में चूड़ी पांव में बिछियां
मांग में सिंधूर भरे आत्मा से जुड़ी है।
चेहरे पर झुर्रिया पड़ने लगी है
आंख,कान घुटने तक सवाल करने लगे है ।
केश भी अश्वेत नही रहे
दायित्वबोध आज भी जवान है,
हर्षित खूंटे से बंधी मान–सम्मान से सजी है जो,
धन्य वादे पर खरी,सच्ची सहगामिनी है वो ।नन्दलाल भारती

25–सोलह साल

जब वो चौखट पर पांव रखी थी
हंसता हुआ पुष्प थीं
या
यों कहे सोलह साल की कली थी
अंगना में बसन्त उतर जाता था
जब वो हंसती थी
पर अब क्या ? वो भूल गयी
दर्पण से भी खिझने लगी
वक्त की रौदी वो कली बदनसीब मुरझाने लगी ।
हाथ में मेंहदी,पांव में महावर रचना भूल चुकी है,
पर मांग सजाना नही भूलती है कभी ।

सांसो पर नाम खुदा लिया है
रक्षा के लिये व्रत उपवास करती है
पति को परमेश्वर कहती है ।
दैहिक दैविक भौतिक तापा पर भी
बसन्त झरता रहता है कुटुम्ब के लिये ।
हौशले वैसे जैसे,पहली बार चौखट हो चढी,
फर्ज के आगे उम्र कम लगने लगी है
वो जिद पर अड़ी है
सपनों में जीने लगी है ।नन्दलाल भारती

26– उजाले का त्यौहार

जिन्दगी है,आज है कल है
कमजोर नही ताकतवर है मीनाक्षी
हार नही जीत है,सपना नही हकीकत है ।
ओद बिछाती ओद ओढती,सुख देती है
दर्द में डूबकर भी कल में जीती है
मीनाक्षी का मान, दुनिया यज्ञ कहती है ।
बचपन से बनाती माटी के घरौदे
होश आते हकीकत बन जाती है
जीवन पथ पर बहुत कुछ सहती है
त्याग की ताकत पर मीनाक्षी
सरस्वती,लक्ष्मी दुर्गा बनती है ।
सेवा,ममता–समता बलिदान गहना
जप–तप शान्ति,सकून प्रार्थना
मीनाक्षी का सपना ।
मंदिर के घण्टे शंख की आवाज है
घर–मंदिर में दैवीय छांव है
रोशनी की बात करे तो
दीयों की कतार है,
सचमुच मीनाक्षी मीनाक्षी बनी रहे तो
घर मंदिर उजाले का त्यौहार है ।नन्दलाल भारती

27– नारी की चाह

सच्ची नारी की चाह यही
कर्मभूमि का कतरा–कतरा, खुशबू फैलाये
मैं कभी बात नही करता उस नारी की
जिसने अंग प्रदर्शन किया,
अश्लीलता को पोसा,

हया की कर दी है निलामी ,
मै तो उस नारी की करता बात,
लवाही की भांति मान बनाये रखा है ।
सच ऐसी सच्ची नारी
जिन्दगी की पहचान बनती है
कर्म को सुर–ताल,
कल्पनाओं को नया आकाश देती है।
हया,ममता–समता त्याग के बिना
अस्तित्व नारी का वैसा ही है
जैसे सूरज के बिना दुनिया
सच दुनिया की पहचान है नारी
जीवन है जीवन की सुगन्ध है नारी
सर्वश्रेष्ठता की कुंजी है
धरती का कतरा–कतरा जीवन संगीत गाये
यही चाहे सच्ची नारी । नन्दलाल भारती ।लवाही–सूखा गन्ना ।

28–सुनामी

औलादो की आंखों का मरने लगा है पानी,
बदलते जमाने में बूढी आंखों में ,
उभरने लगा है दर्द का सुनामी
होने लगे तार–तार अरमान
फूटी थाली बासी रोटी दुख भरी कहानी
छलने लगे अपने,टूटने लगे सपने
नाथ बना लगे अनाथ
रोटी का दर्द उभरने लगा है
मां–बाप नया आश्रय ढूढने लगे है ।
कैसे हो पूछने भर की बात है
निराशा का भाव उभरने लगे है
टपकता आंख का पानी,
हाथ छुड़ाकर भाग रही औलाद का,
सच बयान करने लगा है ।
आज के जमाने में,
बूढ़े मां–बाप को रोटी का दर्द सताने लगा है
कपूतों को छाती का लहू ,
बोतल का पानी लगने लगा है ।
अरे कपूतो चेतो मां बाप के दर्द को जानो
रोको इनकी आंखों में बहता पानी

हे कपूतों यदि नही रूका ये पानी तो,
बन जायेगा जीवन का सुनामी । नन्दलाल भारती

29–मृत्यु शैय्या ।

हाय बलात्कार मृत्यु शैय्या का दुख
बन जाता जीवन नरक पशुता की भूख ।
कामवासना का खूनी जंग
मानवता रह जाती दंग ।
बिन गुनाह की सजा ये कैसा अन्याय
मर्यादा का चीरहरण, जीते जी मरण
जीवित काया बनती मुर्दा समान
अरमामानों को लगता ग्रहण ।
बलात्कार नारी जीवन का पीर
अमानुष बलात्कारी देता अस्मिता चीर ।
बलात्कार अपराध घिनौना
ना जीवन का बने अभिशाप,
अमानुषों को मिले तुरन्त कठोर सजा
ना पनप पावे फिर पाप ।
ना होवे कोई मृत्यु शैय्या की शिकार
ना बरसे आंखे कोई, हर्ष उठे सदाचार ।नन्दलाल भारती

30– गृहलक्ष्मी

गृहलक्ष्मी का उतपीड़न करता जीवन उदास
दहेज लोभ बना जहर, मर गयी आस ।
साधना कठिन जीवन के थे ये सपने
फेरे सात पूरे नसीब रूठी चौखट अपने ।
दहेज की तलवार बहू पर होते वार
टूटे सपने नसीब सपनों की बौझार ।
छहेज हर लेता कुल का सूख
भर देता निरापद की झोली दुख ।
दहेज ने क्या दिया ?
असमय मौत,जेल ,बर्बादी करो पड़ताल,
रोको सामाजिक बुराईयां,
ना करो कैद जीवन की सुर–ताल ।
कर लो वादा ,
ना दहेज की आग जलेगी, ना मरेगे अरमान
तौबा उत्पीड़न से, गृहलक्ष्मी पायेगी पूरा सम्मान । नन्दलाल भारती

32–बूढी मां

आज वो चौरस्ते पर पड़ी थी
आंखे साथ छोड़ चुकी थी ।
ठेहुना सवाल पर उतर चुका था
हड्डी से चमडियां खेल रही थी ।
निष्काषित आसरा ढूढ रही थी
पहले से निराश्रित नही थी ।
जवान पुत्री और पुत्रो की मां थी
बेटी की डोली उठ चुकी थी ।
जुल्म के जख्म रिस रहे थे
मौन दर्द भरी दास्तान कह रहे थे ।
बदहवास रोटी को झंख रही थी
आखिरी पड़ाव पर ठांव ढूढ रही थी ।
आज आतंकित कल से आशंकित थी
गम में अहक–अहक दहक रही थी ।
लूट गया था सब,
सड़क पर पहुंच चुकी थी
पति की मौत बेटों के जुल्म से टूट चुकी थी ।
दौलत लूट सपने टूट चुके थे
जिन्दा लाश के नयन बरस रहे थे ।
मजबूर दर–ब–दर भटक रही थी,
बेटी से आशा बेटों से भयभीत थी ।
बेटे बन गये थे जहर,
बीटिया अमृत लग रही थी
जीवन की बन्द गली में
बेटी का घर ढूढ रही थी
वो कोई और नही एक बूढी मां थी । नन्दलाल भारती

33–कत्ल

मां कत्ल कर सकती है भला
वह तो प्राणवायु का एहसास,
मां तो है महानता की शिखर
आसपास नही पलता कोई दोष
मां निर्दयी हो सकती है
सोच अपराधबोध अफसोस ।
आज शैतान की नजर लग गयी
वह भी कातिल हो गयी
करने लगी है कोख में हत्या ।

भला मां हो सकती है कसाई ।
मं ना थमी तेरी निर्दयता तो
मिट जायेगा सेवा–त्याग ममता–समता
कलंकित हो जायेगी आस्था
खण्डित हो जायेगा विश्वास ।
ना कर भेद अपने ही खून में
ना कर कत्ल मां कल की मां का।
हे मां तू मां बनी रह बस
यही देवत्व है अमरत्व है
और मेरी आराधना भी । नन्दलाल भारती

34–आधार

नारी कायनात की आधार है
धरती का उज्जवल सार है
कहीं मां कहीं बहन कही पत्नी
बो रही है सपने ।
नारी हर भूमिका में श्रेष्ठ है
शक्ति के रूप में ज्ञान के रूप
धनधान्य के रूप में भी ।
यही भूमिकायें तो बनाती है
नारी को आदरणीय और पूज्यनीय ।
आज नारी के भी पांव बहकने लगे है
हत्या,व्यभिचार अपराध होने लगे है
बदला रूप कायनात को डंसने लगा है ।
नारी अजमा सकती है हाथ भला
जीवन संहार में
विश्वास नही होता पर होने लगा है ।
नारी ना भूलो तुम कि
कायनात की तुम आधार हो
रंग बदलती दुनिया में ना बदलो
अब सच्चे रूप में आ जाओ
आस्था विश्वास फलीभूत हो जाये
मानवता अभिभूत हो जाये । ।नन्दलाल भारती

35–मां मर नही सकती।

मां मर नही सकती
मरती है तो मां की काया
पंचतत्व के छिन्न–भिन्न होने पर भी

सन्तानों के सिर का छांव होती है मां
रक्त में प्रवाहित होती रहती है
मां कभी नही मर सकती ।
चिता पर काया राख हो जाती है
लेकिन मां नही
ना आग मां को भस्म कर सकती है
ना यमराज मां के एहसास को खत्म कर सकता है
मां मरेगी तो कायनात कहां कायम रहेगी ?
मां हमेशा जिन्दा रहती है औलादो में
मां का हाथ औलाद के सिर पर रहता है
मुझे तो विश्वास है ।
मेरी मां मरकर भी जिन्दा है
मैं साक्षी हूं मां के दाह–संस्कार का,
27 अक्टूबर 2001को
मर्णिकर्णिका घाट पर हुआ था
लेकिन मुझे लगता हां कि मां नही मरी है
मरी है तो बस मां की काया
मां की उपस्थिति का एहसास है
निराशा के पलो में मां तो शक्ति देती है
सुख के पलो में खुशी का एहसास भी ।
मेरा मन कहता है
मां मर कर भी मर नही सकती
वह जिन्दा रहती है अपनी औलादो में । नन्दलाल भारती

36– नारी विमर्श।

आज की नारी तुम कर लो संकल्प
उपर उठना है बंश मोंह से
लेना है बराबरी का हक
तुम्हे चाहिये तो सामाजिक समानता
बंश की चिन्ता में ना मरो अब।
अब तुम संघर्ष करो
सामाजिक समानता की मान्यता के लिये
तोड़ दो मौन अपना
रूढिवादी आंखों से नही
खुली आंखों से देखो सपने।
बदल डालो तुलसी की चौपाई
शुद्र गंवार ढोल पशु नारी

समान अधिकार की मांग करो
मौन में जीना छोड़ दो
रूढिवादी बंदिशें तोड़ दो ।
महाभारत और रामायण में क्या हुआ ?
मालूम तो है ना ?
ना सहो अत्याचार,शोषण ,ना मरो दहेज की आग,
करो नारा बुलन्द नर–नारी एक समान
चाहिये सामाजिक समानता का अधिकार
यही है आज का नारी विमर्श
शुरू कर दो संघश आज से ही...... नन्दलाल भारती

37–वह बिनती थी ।

वह बिनती थी,
पेट की आग बुझाने के लिये
दूसरों के खेत में छुटे,
एक–एक दाने और बालियां
मैली–कुचैली जगह–जगह से
फटी साड़ी में ढकी हुई
कंधे पर टंगा होता था
मैला कुचैला टाट का थैला
जोड़ती रहती थी टाट के थैले में
गांव के मालिको के खेत में छुटे
एक –एक दानें बूढे कांपते हाथो से ।
यह वही गांव था
जहां उगता है सूरज सबसे पहले
आबाद है बेटे–बेटी और नाती–पोते भी
परन्तु उस बूढी के लिये कोई
कोई मायने नही रखता था ये सब
क्योंकि
वह निष्काषित थी पुत्र के हाथों ।
वक्त बदला पर तकदीर नही बदली
वह बिनती रहा दाना–दाना
सूरज उगने से डूबने तक।
जोड़ती रही पेट की आग बुझाने का सामान
अपनों के बीच पराई होकर ।
परिवार धन वैभव सब कुछ था
उसके लिये तपता रेगिस्तान

भूख के आगे ।
वह रूकी नही जब तक थकी नही
थक कर जब गिरी तो उठी नही
चल बसी छोड़कर
अनाज से भरी गगरी
और
उजड़े सपने का हंसता संसार। नन्दलाल भारती

38–सामने वाले घर में ।

मेरे सामने वाले घर में
एक दुल्हन रहती है
सास है,ससुर है,ननद,देवर
पति हृष्ट.–पुष्ठ,अच्छा व्यापार
खाता–पीता परिवार ।
आधुनिक साजो–समान है
दुल्हन का नही परिवार में मान है
अपराधी घोषित हो चुकी है
क्योंकि बड़ी बहन,
अर्न्तजातीय शादी कर चुकी है ।
निरापद करे कोई भरे कोई की,
प्रताड़ना पा रही है
चरित्रहीनता का कलंक ढो रही है
सजातीय ब्याह कर खुद दुख
बहन दुनिया का सुख भोग रही है ।
मेरे सामने वाले घर में,
एक दुल्हन रहती है
जो कुल की मर्यादा पर मरती है । नन्दलाल भारती

39–ललकार ।

गांव की सौभाग्य से कुछ पढी लड़की,
बूढी लग रही थी
बेसहारा दुख का बोझ ढो रही थी
फटे वस्त्र में नारी की मर्यादा,
ढापने की कोशिश कर रही थी ।
परिचित अपरिचित हो गये थे
संग खेले दुश्मन लग रहे थे
विस्मित आसरा ढूढ रही थी
ना मालूम था मिलेगा कहां ?

बरगद की छांव बैठकर कर
कर लिया दृढ–प्रतिज्ञा उसने
जमा लिया पांव अंगद की भांति
नये मकसद पर ।
कामयाब हो गयी एक दिन
पा गयी मन–माफिक मंजिले ।
एक प्रश्न था बार–बार पीछा कर रहा था,
क्या मैं दोषी थी ?
या बाप या सौतेली मां
या बेदाग जमाने के रीति–रिवाज
जिसको मैंने ललकार दिया । नन्दलाल भारती

40–विरासत ।

याद है मां का सूप से पछोरना
नियत समय बैठ जाती थी
हैण्डपाइप पर अनाज धोने ।
खुद के पसीने का होता था
साफ–सुथरा
फिर भी शंका होती थी
कंकड़ और छूछे अन्न के मिले होने का ।
हैण्डपाइप पर धोकर सुखाती थी
दिन भर ।
फिर फुर्सत मिलते ही बैठ जाती थी
पछोरने सूप लेकर ।
हर फटकन के बाद
दूर जा गिरते थे कंकड और छूछे अन्न
मां चुन–चुन कर सहेजती थी
दाना–दाना ।
जैसे मां दुख को धिक्कार रही हो
सुख को सहेज रही हो
हमारे लिये ।
धीरे–धीरे मां के हाथ थक गये
चिरनिद्रा में सो गयी
मां की विरासत सम्भाल रही है
मेरे बच्चों की मां ।
शायद हर मां की ख्वाहिश होती है यही
बच्चों के जीवन में बरसे सुख

कोसो दूर रहे दुख
मां के हाथों सूप से ,
पछोरे अन्न की तरह । नन्दलाल भारती

41– पहचान।

औरत को देह से बस क्यो गया पहचाना
दिल में दर्द,समर्पण क्यों नहीं गया जाना ।
अन्याय–बाजार, घरपरिवार में पीसना
ताड़ना की अधिकारी तुलसी का कहना ।
बेटी को परायी जमाने ने है माना
अट्ठारहवे बरस दूसरे घर है जाना ।
उम्र गुजरती सात फेरों की कसम,
तन–मन समर्पित पर ना छंटा भरम ।
आज औरत–मर्द के भेद का तूफान है
तकदीर,सिसकती रात दुखता विहान है।
अरे दुनियावालो औरत मर्द समान है,
औरत धरती की निर्मल पहचान है । नन्दलाल भारती

42– कायनात

जीवन में आंसू,
खुद नदी खुद है समन्दर
ममता,समता त्याग जिसके अन्दर ।
देखने पर बसन्त, सोचने पर कायनात प्यारी,
गंगा जमुना सरस्वती का संगम है नारी ।
शक्ति की देवी ,धन बल ज्ञान सृजती है
धरती की जन्नत फिर भी जुल्म सहती है ।
शैतान की एक पीढी खाक हो जाती है
औरत जब दहेज की शूली चढायी जाती है । नन्दलाल भारती

43–पिजड़े का पंक्षी

सदियों से बंधी रही बंदिशों के खूटें से
जकड़ी रही जिम्मेदारियों की जंजीरो से
डरी सहमी भरती रही सांस
सोने के पिजड़े के पंक्षी की तरह ।
रूढिवादी बंदिशे नही जकड़ पायी
भावनाये और गंगा सा निर्मल मन ।
खैर बंदिशे भी तो हार जाती है
जब सीमा पार हो जाती है
सीमा जब दमनकारी हो जाये तो,

टूटने की सम्भावनायें बढ जाती है ।
वही हुआ रूढिवादी बंदिशो में
सांस लेना दुश्वार हो गया
झटपटाहट में टूट गयी बंदिशे
रूढिवादी बंदिशे अवाक् रह गयी
पिजड़े के पंक्षी की आजादी से ।
याद रही औरत को अपनी सीमायें,
वह छूने लगी है आसमान
पर दायित्वों को नही भूली है आज भी...... नन्दलाल भारती

44–बदी क्या करेगी ?

चांदनी की छांव में सुलगना कहां भाता है
वह सुलग रही है
पुरानी सोच बबूल की छांव साबित हो रही है
हक की उम्मीद में बेदखल हो रही है
कल अधलिखा खत लगने लगा है
सामने जैसे कोई तूफान विहस रहा है
डरा रही है जमाने की खाईयां
कब तक डरायेगी परछाईयां
देखने पर लगता है जैसे मुट्ठी में आग थामें
सृजन के गीत गा रही हो
आंखों से उतरती जलती हुई नदी,
हरियाली का वरदान दे रही हो
वही जिसे कभी बांट लिया तो,
कभी बाजार दिया जमाने ने
दीवानी नही काढी कभी फन जिसने
चलने की जिद है, थकने की आदत नही
न झुकेगी और न थकेगी
धुन की पक्की है सृजन की शक्ति है
हारकर भी नही हारेगी क्योंकि
औरत का दूसरा नाम है नेकी
वो बदी क्या करेगी ? नन्दलाल भारती

45– दुनिया ने देखा है

कभी खुशी कभी गम के झूले में
झूलती नारी को देखा है
नारी बन जाती है प्रेरणा और वासना
वजूद के लिये संघषरत् नारी को

पुरूष का वजूद संवारते दुनिया ने देखा है।
नारी त्याग की मूरत
मंथरा और कैकेयी जैसी आंखों में
नफरत के शोले
घर को मंदिर और रणभूमि बनाते भी
दुनिया ने देखा है ।
पसून को पाषाण पानी को आग
कल्याणी का रौद्र रूप बनते देखा है
धरती जैसी सहन शक्ति
नारी के सद्प्यार को दुनिया ने देखा है ।
मां,जीवन की परिभाषा है नारी
भावों की अनुभूति स्नेह की छांव को
घृणा के दलदल में फंसते देखा है
आशा और अभिलाषा है
नारी के पूज्यनीय रूप को दुनिया ने देखा है । नन्दलाल भारती

46– परम्परा के नाम पर

कुछ सौ बरस पहले विधवायें
जल मरती थी
या आग के कुयें में ढकेल दी जाती थी
रूढिवादी परम्परा के नाम पर
दे दी जाती थी संज्ञा सती की ।
वर्तमान में भी मर रही है
या मारी जा रही है
कहीं पेट में, कहीं खेत में कहीं दहेज की शूली पर ।
कुछ औरते घर मे मर जाती है या मारी दी जाती है
कुछ अस्पताल पहुंच कर मर जाती है
कुछ पहुंच भी नही पाती है,
कुछ के बयान दर्ज हो पाते है कुछ के नही
कुछ स्वेच्छा से मरने का झूठ बोल कर मर जाती है
कुछ स्टोव के माथे थोप जाती है
कई अभागिनों के तो टुकड़े हो जाते है
कई तन्दूरों में खाक हो जाती है ।
दूसरी और भी है जो अत्याचार सह रही है
वह है कमजोर शोषित वंचित औरत
सरेआम चीरहरण बलात्कार हो जाता है जिसका
नंगा घुमाया जाता है

नीच डायन घोषित किया जाता है
जू नही रेंगता
क्योंकि कानून सबूत मांगता है
समाज नीचता देखता है
क्हीं से चीख उठ भी जाती है तो
भौंहे तलवार की तरह तन जाती है
फिर क्या दफन हो जाती है
लावारिस लाश की तरह ।
औरतें सहती आ रही अत्याचार सदियों से
वह कौन थी जिसे पहली बार जलाया गया
या वह कौन होगी जो आखिरी बार जलेगी
मैं नही जानता पर इतना जरूर जानता हूं कि
वह किसी की बेटी होगी
और यह भी जान गया हूं कि
इसे प्रतिबन्धित किया जा सकता है हमेशा के लिये । नन्दलाल भारती

47– त्याग नही तो क्या ?

दर्द को जिसने गले लगाया
प्यार की भूखी ना इजहार किया
गम में डूबी गढती सुखद संसार
ये त्याग नही तो क्या ?
भर–भर अंजुरी देना सीखा
ल्ने का नही जाना हाल
भींगी पलके जिसकी
विपरीत बयार पर ठमकी
कामना बरसे सुख द्वार
ये त्याग नही तो क्या ?
छाती निचोड़ती देती आंचल की छांव
आहें बहरी होती जिसकी
पल–पल पर त्याग पग–पग पर प्रहार
ये त्याग नही तो क्या ?
आंखों की दरिया गंगाजल
मन के समन्दर सुखी घर संसार
कभी बाप के लिये उपासना
कभी पति परमेश्वर की प्रार्थना
नारी जीवन का उजियार
ये त्याग नही तो क्या ?

सांसे समर्पित आहों का नही मोल
अग्निपरीक्षा अब मुट्ठी में आसमान
दोहरी भूमिका की सफलता गिना रहा संसार
ये त्याग नही तो क्या ? नन्दलाल भारती

48– क्यों कहता है ?

जमाना क्यों कहते है मजबूर
छू लिया है जिसने हर उचाईयां
ना है वह अबला ना मजबूर
कर्मपथ पर नही गिरती थककर चूर
जमाना क्यो कहता है मजबूर ?
मां बहन बेटी और सहगामिनी के रूप में
निचोड़ देती है जीवन
गढ देती है उचाईयां
ये कैसा है दस्तूर ?
जमाना क्यो कहता है मजबूर ?
सबला है अबला नही
अव्वल है दोयम दर्जे की नही
स्नेह की सरसो बोने वाली का
क्या है कसूर ?
जमाना क्यो कहता है मजबूर ?
सुबह के इन्तजार में
जीवन का कर देती हवन
फर्ज पर खरी जीवन तप जिसका
नेकी का जीवन बदनेकी से दूर
जमाना क्यो कहता है मजबूर ? नन्दलाल भारती

49–पतिता

गुलामी,मां के पैरों की देख जंजीरे
पतिताओं के घुघुरू उगले थे अंगारे ।
आजादी का महासमर राजा रंक सब थे जुटे
देश भक्त पतितायें कैसे रहती पीछे
वे भी कूद पड़ी ।
अजीजन नर्तकी देशभक्त कानपुर वाली
देश पर मर मिटने का जज्बा रखने वाली ।
कानपुर में गोरां ने किया आक्रमण जब
कूद पड़ी रणभूमि में विरांगना तब ।
दुर्भाग्यबस गोरां के हाथ आ गयी

गोरो की शर्त माफी मांगे,हो गयी शहीद
रिहाई की शर्त को ठोकर मार गयी ।
पूना की चंदाबाई देशभक्त थी
गीतों से देशप्रेम की मशाल जलाया करती थी ।
चन्दाबाई का गीत प्रसिध्द एक,
परिन्दों हो जाओ आजाद
काहे तुम पिजरे में पड़े
राजाजी जुलुम करें ।
काशी की ललिताबाई चनदा मांगती थी
खद्दरधारी चरखा चलाया करती थी ।
अंग्रेज कोतवाल की तरफ पीठ कर थी गायी,
ऐसों की क्यों देखे सुरत
जिन्हे वतन से अपने नफरत ।
आरा की गुलाबबाई भी शोला थी
आजादी खातिर तलवार उठा ली थी ।
पतिताये भी धन्य,
आजादी के समर तप पावन हुई
भारत मांता की बेड़ियां काटने में सफल हुई ।
भले भूल गया हो इतिहास,
पतिताये भी आई देश के काम,
ऐसी जानी–अनजानी शहीद पतिताओं को प्रणाम । नन्दलाल भारती

50– आह्वाहन

दुनिया के इतिहास ने भले दिया है महत्व कम
भारत ने मातृशक्ति का आंकलन नही किया कम ।
माना है मातृशक्ति के बगैर अपूर्ण है समाज
उत्साह भरने और कर्ज उतारने का वक्त है आज ।
योग्यता और क्षमता से समाज और राष्ट्र का विकास
भूत–वर्तमान गंगा सा कल से भी ऐसी निर्मल आस ।
साहित्य–समाज सेवा, राजनीति चिकित्सा और विज्ञान
दुनिया जानी मातृशक्ति ने नाप लिया है आसमान ।
सामाजिक चेतना और कल्याण नारी प्रगति के है अर्थ
प्रेरणापुंज नारी के बिना दुनिया भर की तरक्की व्यर्थ ।
मातृशक्ति कमजोर नही कोमल, पर ममता की मूरत
श्रमसरिता,बुध्दि प्रकाश और वैभव की है उजली सूरत ।
जीवन की पहचान उदे्श्य औरों के लिये जीना मरना
ये दुनिया वालों नारी है जन्नत ना अब जुल्म करना ।

नारी मुक्ति का वक्त है दुनिया वालो संकल्प दोहराओ
ना अब ना अग्नि परीक्षा,मातृशक्ति को शिखर बिठाओ । नन्दलाल भारती

51–मां के नाम

मां का स्वर्गवास हो गया था
सान्तवना देते लोग नही थक रहे थे
लोगो की उमड़ती भीड़
ढाढस बंधाते लोग
आप बीती कह रहे थे
ताकि गम सहने की शक्ति सके
सब कुछ होने के बाद भी
यकीन नही होता
जबकि लम्बी शवयात्रा निकली थी
परिवार,गांव–पुर के लोग ही नहीं
खुद ने कंधा दिया था
चार मन लकड़ी
चन्दन घृत की चिता पर लेटी
मृत मां की काया को
पिता ने मुखाग्नि दी थी
ढेरो लोग साक्षी थे,
बनारस के मर्णिकर्णिका घाट पर
पिता ने बुझती चिता के चारो ओर
कंधे पर घड़ा रखकर ,
गंगाजल गिराते हुए पांच परिक्रमा पूरी किया
खुद ही नही ढेरो लोगो ने
नम आखों में आंसू छिपाये
गम की गठरी दिल में दबाये
मर्णिकर्णिका घाट पर आखिरी नमन् किया
मां की मृत काया अग्नि को समर्पित हो गयी
अवशेष गंगाजी को अर्पित कर दिया गया
हमारी नम आंखों की गवाही में ही नही
और लोगों की गवाही में भी
बेकार,घाट,तेरहवीं सब सम्पन्न हो गया
विधिविधान से
बावन गांव के लोग शामिल हुए थे तेरहवी में
पर मेरे यकीन को बल नही मिला
मेरी मां का आकार जैसे

अदृश्य सा मुझे निहार रहा हो आज भी
लोग कहते है मां मर गयी
पर मैं नही मानता कहता हूं
शरीर नश्वर है मां का भी था
सो हो गया
मां मरी नही पंचतत्व में विलीन हो गयी
मां न मरी है ना मर सकती है
जब तक वायु में वेग है सूरज में तेज
चांद में शीतलता और धरा पर जीवन
तब तक मां मर नही सकती
मां के नाम वन्दन,
अभिनन्दन शत्–शत् नमन् । नन्दलाल भारती